ЗАПИСКИ

ВОСТОЧНАГО ОТДѢЛЕНІЯ

ИМПЕРАТОРСКАГО

РУССКАГО АРХЕОЛОГИЧЕСКАГО ОБЩЕСТВА.

ИЗДАВАЕМЫЯ ПОДЪ РЕДАКЦІЕЮ УПРАВЛЯЮЩАГО ОТДѢЛЕНІЕМЪ

Барона **В. Р. Розена.**

ТОМЪ ВТОРОЙ.

1887.

(СЪ ПРИЛОЖЕНІЕМЪ ВОСЕМНАДЦАТИ ТАБЛИЦЪ.)

С.-ПЕТЕРБУРГЪ.

ТИПОГРАФІЯ ИМПЕРАТОРСКОЙ АКАДЕМІИ НАУКЪ.

Вас. Остр. 9 лин., № 12.

1888.

Буддійскія молитвы.

II.

Гимнъ, приведенный въ прошлой статьѣ есть общая исповѣдь грѣшника, покаянная пѣснь передъ Авалокитеçварой; не таково содержаніе помѣщаемаго далѣе славословія[1]) Харшадевы. Объ авторѣ намъ ничего неизвѣстно; Тâрâнâтха, впрочемъ, упоминаетъ о кашмирскомъ царѣ Харшадевѣ[2]).

---

1. Воспѣтаго толпами Суровъ, (кого пѣли) на небѣ и на землѣ Сиддхи, Гандхарвы, Якши, разнообразными словами (пѣли) величайшіе подвижники — и я, потчившись, славлю святаго Вѣщаго. Развѣ пчелы, оттого что Гарудѣ подражаютъ, по небу не двигаются?

2. Въ комъ зло уничтожено, и грѣхъ безостаточно истребленъ, кто цвѣтомъ какъ злато расплавленное, чьи очи какъ лотусъ распустившійся растянулись, тотъ, кто съ блестящимъ вѣнцомъ и съ красою блестящаго ореола, о десятисильный[3]), твой разсвѣтъ вѣчно свѣтелъ!

3. Сладострастія силу[4]) преодолѣвшаго, пути заблужденія разрушившаго, тремъ мірамъ пользу содѣлавшаго, сѣти женъ (словно изъ) пол-

---

1) Для этаго текста мы пользовались слѣдующими рукописями: 1) *A*. текстъ гимна съ неварскимъ переводомъ. Новая рукопись; 14 стр. — 2) *P*. Рукопись въ Парижской національной библіотекѣ (fond Burnouf, 125). — 3) и 4) *B*. и *C*. два сборника изъ нашего собранія. Оба сборника также какъ и рук. *A*. вывезены изъ Катманду.

2) Васильевъ, Буддизмъ, III. 201. Въ Данджурѣ есть два гимна, приписываемые этому имени. — Томъ не указанъ.

3) Эпитетъ Буддхы. О десяти силахъ см. Махâвјутпатти, 26. Срв. Kern, Buddhismus, I. 346.

4) *Мадана* въ неварскомъ переводѣ передается словомъ कामदेव.

зучихъ растеній (путы) уничтожающаго, полнаго блага подателя, невѣдѣнія скалу разсѣкающаго, твой, о десятисильный и т. д.

4. Дремлетъ творецъ людей[1]), изъ лотуса рожденный, самосущій, великій богъ, богъ первородный для Асуръ, Суръ и людей, всего міра вождь, міросозданія тождество, а твой, о десятисильный и т. д.

5. На склонѣ горы Удаја стоящее, румяное какъ коралла надломъ, лучами тьму уничтожающее, единое око людей, солнце подвижное—и то вѣчно дремлетъ, а твой, о десятисильный и т. д.

6. Блѣденъ какъ зубъ слона, съ лучами хладными мѣсяцъ — словно родинка ночи — этотъ перлъ Çарвы, въ комъ любовная страсть не исчезла, и онъ вѣчно дремлетъ, а твой, о десятисильный и т. д.

7. Съ четырьмя прекрасными руками, четвероликій, молитвъ и обязательствъ законы вѣдующій, Сама-веду изрѣкшій, изъ чистаго лотуса рожденный и Брахмâ дремлетъ, а твой, о десятисильный и т. д.

8. Какъ лепестокъ водяной лиліи синь, съ глазами великими какъ лотусъ, враждебныхъ Суровъ смѣлый уничтожитель, все творящій и многообразный, и Хари давно дремлетъ, неосвободившись отъ материнскаго чрева (т. е. отъ перерожденій), а твой, о десятисильный, и т. д.

9. Свѣтелъ какъ Халмалая макушка, змѣями, вмѣсто жертвеннаго снура, перевитый, въ сожженіи трехъ крѣпостей[2]) искусный, тигровою кожею прикрытый, и сей съ трезубцемъ[3]) дремлетъ вмѣстѣ съ дщерью Халмалая, а твой, о десятисильный и т. д.

10. Съ горящимъ жезломъ въ рукѣ, неодолимый, врагъ Дâнавовъ и Суровъ вождь, обезумѣвшій въ любовныхъ играхъ съ Çачî, и сей[4]) въ трясину страсти погруженный, днемъ и ночью дремлетъ, а твой, о десятисильный, и т. д.

11. Блѣденъ какъ разцвѣтъ лотуса зимнею ночью, съ очами красными отъ опьяненія, въ тѣлѣ силенъ, съ плугомъ и мечемъ, и Бала[5]) почіетъ здѣсь, припадшій на шею Реватî, а твой, о десятисильный и т. д.

12. Съ образомъ слона и единымъ бивнемъ, всегда препятствія уничтожающій, въ комъ медовыя капли распустились, и у кого за щекой рои пчелъ и Ганапати дремлетъ — виномъ опьяненный, а твой, о десятисильный и т. д.

---

1) Брахмâ.

2) Въ неварскомъ переводѣ: त्रिपुरदैत्य

3) Çива.

4) Индра.

5) Въ неварскомъ переводѣ стоитъ: बलराम.

13. Какъ цвѣтъ аṭаси[1]) теменъ, чья сила въ рукѣ, тѣломъ словно свѣжій цвѣтъ лотуса, шестиликій убійца Краун̆ча и сей Кумâра треокаго сынъ дремлетъ, а твой, о десятисильный и т. д.

14. Съ пучкомъ изъ рыжихъ косъ, съ глазами, рдѣющими какъ красная мѣдь и Паçупати временами въ гнѣвѣ жгучемъ искусный, и сей жертвъ пожиратель, въ тѣлѣ пышный отъ полнаго сока, дремлетъ, а твой, о десятисильный и т. д.

15. Яма, Варуṇа, Кувера, князья Якшовъ, Дайтьевъ, змѣй, въ небѣ, на землѣ, и въ воздухѣ хранители міровъ и другіе (боги), взираемые очами любовными юныхъ женъ — и тѣ дремлютъ, о десятисильный и т. д.

16. Великіе мудрецы Ватса, Бхṛгу, Аӈгира и проч., Кратy, Пулаха, Ваçиштха, Вjâса, Вâлмики, Гарга — обезумѣвшіе отъ прельщенія чужихъ женъ — дремлютъ, а твой, о десятисильный и т. д.

17. Въ океанъ бытія погруженные, сѣтями безумія опутанные: Ману, Капила, Каṇа и проч., блуждающіе и помутившіеся, глупцы, лишенные награды полнаго блаженства дремлютъ, а твой, о десятисильный и т. д.

18. Безъ пищи и покрова, безобразные, у кого тѣло какъ у Претовъ вдоволь всякими ударами поражено, для кого оба хода несуществуютъ, нагіе вѣчно дремлютъ, а твой, о десятисильный и т. д.

19. У тебя однаго, съ очами вѣдѣніемъ отверстыми — разсвѣтъ! Для ослѣпленныхъ тьмою невѣдѣнія солнце вѣчно зашло.

20. Разсвѣтшему, здѣздному, благостью привѣтствуемому Вѣщему, и закону и саṁгхѣ ежедневно поклоняюсь.

21. Опять разсвѣтъ, опять солнце взошло, опять луна, опять ночь, и вновь смерть, старость и рожденія; о Мудрецъ! не помышляетъ о пройденномъ и о грядущемъ безумецъ,

22. заснувшій въ ночной тьмѣ невѣдѣнія, на широкомъ ложѣ вожделеній, на подушкѣ чувственнаго. Да будетъ вѣчно почтеніе тому кто бдитъ, и во время вѣщаетъ награду за добро и зло.

23. Сотни коровъ пьютъ воду у спуска и утоляются, но не изсякаетъ вода, сотни пѣвцевъ такъ точно пьютъ, и не изсякаетъ море добродѣтелей мудреца этого океана добродѣтелей.

24. Воспѣлъ міра просвѣтителя, лучшаго изъ великихъ мудрецовъ, пречистое древо закона, не имѣющаго себѣ подобнаго, въ комъ тьма грѣха и страсти уничтожена, чувства успокоились и нѣтъ вожделеній, и что доброе мною содѣяно, да увѣруетъ за это весь міръ въ десятисильнаго на разсвѣтѣ отъ радости славословія.

---

1) Въ неварскомъ переводѣ стоитъ: अटसिस्वानध्य ह्वाकु т. е. теменъ какъ цвѣтокъ аṭаси. Какой это цвѣтокъ и правильно-ли это чтеніе? — намъ неизвѣстно.

॥ नमो बुद्धाय ॥

स्तुतमपि सुरसंघैः सिद्धगन्धर्वयक्षैर्दिवि भुवि सुविचित्रैः स्तोत्रवाग्भिर्यतीशैः ।
अहमपि कृतशक्तिर्नौमि संबुद्धमार्यं नभसि गरुडयत्ते[1] किं न यान्ति[1] द्विरेफाः[1] ॥ १ ॥
क्षपितदुरितपक्षः क्षीणनिःशेषदोषो द्रवितकनकवर्णः फुल्लपद्मायताक्षः ।
सुरुचिरपरिवेषः[2] सुप्रभामण्डलश्रीर्दशबल तव नित्यं सुप्रभातं प्रभातम् ॥ २ ॥
मदनबलविजेतुः कापथोच्छेदकर्तुस्त्रिभुवनहितकर्तुः स्त्रीलताजालहर्तुः[3] ।
समसुखफलदातुर्भेत्तुरज्ञानशैलं[4] दशबल° ॥ ३ ॥
असुरसुरनराणां यो ऽग्रजन्माग्रदेवः सकलभुवननाथो लोकसृष्ट्येकशब्दः ।
स्वपिति मनुजधाता अब्जयोनिः स्वयंभूर्दशबल° ॥ ४ ॥
उदयगिरितटस्थो विद्रुमच्छेदताम्रस्तिमिरकिरणहन्ता चक्षुरेकं प्रजानाम् ।
रविरपि परिलोलः[5] सर्वथा सोऽपि सुप्तो दशबल° ॥ ५ ॥
द्विरददशनपाण्डुः शीतरश्मिः शशाङ्कस्तिलक इव रजन्याः शर्वचूडामणीयः[6] ।
अविगतमदरागः सर्वथा सोऽपि सुप्तो दशबल° ॥ ६ ॥
प्रवरभुजचतुष्कः षोडशार्धार्धवक्त्रो जपनियमविधिज्ञः सामवेदप्रवक्ता[7] ।
अमलकमलयोनिः सोऽपि ब्रह्मा प्रसुप्तो दशबल° ॥ ७ ॥
कुवलयदलनीलः पुण्डरीकायताक्षः सुररिपुवरहन्ता[8] विश्वकृद्विश्वरूपी ।
हरिरपि चिरसुप्तो गर्भवासैरमुक्तो दशबल° ॥ ८ ॥
हिमगिरिशिखराभः सर्पयज्ञोपवीतस्त्रिपुरदहनदक्षो व्याघ्रचर्मोत्तरीयः ।
सह गिरिवरपुत्र्या सो ऽपि सुप्तस्त्रिशूली दशबल° ॥ ९ ॥
ज्वलितकुलिशपाणिर्दुर्जयो दानवारिः सुरपतिरपि शच्या विभ्रमे मूढचित्तः[9] ।
अनिशि निशि च सुप्तः कामपङ्के निमग्नो दशबल° ॥ १० ॥
हिमशशिकुमदाभो[10] मद्यपानारुणाक्षो दृढकठिनभुजाङ्गो लाङ्गली शक्तिहस्तः ।
बल इह शयितो ऽसौ रेवतीकण्ठलग्नो दशबल° ॥ ११ ॥
गजमुखदर्शनैकः सर्वथा[11] विघ्नहन्ता विगलितमदधारः[12] षट्पदाकीर्णगण्डः ।
गणपतिरपि सुप्तो वारुणीपानमत्तो दशबल° ॥ १२ ॥
अटसिकुसुमनीलो यस्य शक्तिः कराग्रे नवकमलवपुष्मान्षण्मुखः क्रौञ्चहन्ता ।
त्रिनयनतनयो ऽसौ सो ऽपि सुप्तः[13] कुमारो दशबल° ॥ १३ ॥
कपिलजटकलापो रक्तताम्रारुणाक्षः पशुपतिरपि[14] काले दग्धकोपातिदक्षः ।
समरमदलिताङ्गः सो ऽपि सुप्तो हुताशो दशबल° ॥ १४ ॥

यमवरुणकुबेरा[15] यक्षदैत्योरगेन्द्रा दिवि भुवि गगणे वा लोकपालास्तथान्ये ।
युवतिमदकटाक्षैर्वञ्चितास्ते ऽपि सुप्ता दशबल° ॥ १५ ॥
ऋषय इह महान्तो वत्सभृग्वाङ्गिराद्याः क्रतुपुलहवशिष्ठा व्यासवाल्मीकिगर्गाः ।
परयुवतिविलासैर्मोहितास्ते ऽपि सुप्ता दशबल° ॥ १६ ॥
भवजलनिधिमग्ना मोहजालावृताङ्गा मनुकपिलकणाद्या भ्रामिता मूढचित्ताः ।
समसुखफलहीना बालिशास्ते ऽपि सुप्ता दशबल° ॥ १७ ॥
अशनवसनहीना[16] भाव्यमाना विरूपा अलमखिलविघातैः प्रेतवद्दग्धदेहाः ।
उभयगतिविहीना नित्यसुप्ताश्च नग्ना दशबल° ॥ १८ ॥
सुप्रभातं[17] तवैकस्य ज्ञानोन्मीलितचक्षुषः ।
अज्ञानतिमिरान्धानां नित्यमस्तमितो रविः ॥ १९ ॥
सुप्रभातं सुनक्षत्रं श्रिया प्रत्यभिनन्दितम् ।
बुद्धं धर्मं च संघं च प्रणमामि दिने दिने ॥ २० ॥
पुनः प्रभातं पुनरुत्थितो रविः पुनः शशाङ्कः पुनरेव शर्वरी ।
मृत्युर्जरा जन्म तथैव हे मुने गतागतिं[18] मूढजनो न बुध्यति ॥ २१ ॥
अज्ञाननिद्रारजनीतमसि[19] प्रसुप्तस्तृष्णाविशालशयने विषयोपधाने[20] ।
काले शुभाशुभफलं परिकीर्तमानो जागर्ति यः सततमेव नमो ऽस्तु तस्मै ॥ २२ ॥
तीर्थेषु गोकुलशतानि पिबन्ति तोयं तृप्तिं व्रजन्ति न च तत्क्षयमभ्युपैति ।
एवं मुनेः कविशतानि पिबन्ति तस्य न क्षीयते गुणनिधि[21]र्गुणसागरस्य ॥ २३ ॥
स्तुत्वा लोकगुरुं महामुनिवरं सद्धर्मपुण्यद्रुमं
निर्द्वन्द्वं हतरागदोषतिमिरं शान्तेन्द्रियं निःस्पृहम् ।
यत्पुण्यं समुपार्जितं खलु मया तेनैव लोको खिलं
प्रत्यूषे स्तुतिहर्षतो दशबले श्रद्धां पराविन्दताम् ॥ २४ ॥

इति श्रीबुद्धभट्टारकस्य हर्षदेवभूपतिविरचितं
सुप्रभातस्तोत्रं संपूर्णम् ॥

---

1) B. C. — P. °ड्याते — A. °ड्याते, °ति, °फः — 2) B. C. P. — A. सुरचित°. — 3) B. P. — A. C. °स्त्रि°. — 4) C. — B. °ल — A. °लः — 5) A. — B. मद° — C. रविपरिमलल्लोलः — 6) B. सर्व° — 7) P. °दीपवक्त्रा — 8) A. — B. Этотъ стихъ 10. °बल° — C. Этотъ стихъ 9. — 9) A. — B. °त्ताः — C. °चेता — 10) B. P. — A. °म्भो — C. нѣтъ 11-го стиха. — 11) A. — B. C. °तो — 12) A. B. — C. अविगत° — 13) A. — B. C. नित्यसुप्तो — 14) A. C. — B. стихъ 11. — A. C. °पतिरति° — 15) A. — B. °वेर — C. °वेरो — 16) C. P. — A. B. (15 стихъ) असन° — 17) A. — C. सुप्रभात सुनक्षत्रं и т. д. — B. стихъ 21. — 18) B. C. — A. P. °ती — 19) B. C. — A. °निद्रा° — 20) A. — B. °योप्रधाने — C. °यप्रधाने — 21) B. — A. P. °धिं.

Приведенные два образца буддійскихъ молитвъ далеко не обрисовываютъ всѣхъ сторонъ буддійской религіозной практики. Сами буддисты различаютъ семь видовъ культа [1]). Въ слѣдующихъ далѣе выдержкахъ изъ сочиненія Çантидевы — читатель найдетъ весьма обстоятельное описаніе нѣкоторыхъ изъ этихъ видовъ [2]).

बुद्धं गच्छामि शरणं यावदाबोधिमण्डतः ।
धर्मं गच्छामि शरणं बोधिसत्त्वगणं तथा ॥
विज्ञापयामि संबुद्धान्सर्वदिक्षु व्यवस्थितान् ।
महाकारुणिकांश्चापि बोधिसत्त्वान्कृताञ्जलिः ॥
अनादिमति संसारे जन्मन्यत्रैव वा पुनः ।
यन्मया पशुना पापं कृतं कारितमेव वा ॥
यच्चानुमोदितं किंचिदात्मघाताय मोहतः ।
तदत्ययं देशयामि पश्चात्तापेन तापितः ॥
रत्नत्रये ऽपकारो यो मातापितृषु वा मया ।
गुरुष्वन्येषु वा क्षेपात्कायवाग्बुद्धिभिः कृतः ॥
अनेकदोषदुष्टेन मया पापेन नायकाः ।
यत्कृतं दारुणं पापं तत्सर्वं देशयाम्यहम् ॥
कथं च निःसराम्यस्मान्नित्योद्विग्नो ऽस्मि नायकाः ।
माभून्मे मृत्युरचिरादक्षीणे पापसंचये ॥
कथं च निः सराम्यस्मात्परित्रायत सत्वरं ।
मा ममाक्षीणपापस्य मरणं शीघ्रमेष्यति ॥
कृताकृतापरीक्षो ऽयं मृत्युर्विश्रम्भघातकः ।
स्वस्थास्वस्थैरविश्वास्य आकस्मिकमहाशनिः ॥
प्रियाप्रियनिमित्तेन पापं कृतमनेकधा ।
सर्वमुत्सृज्य गन्तव्यं मया न ज्ञातमीदृशम् ॥
अप्रिया न भविष्यन्ति प्रियो मे न भविष्यति ।
अहं च न भविष्यामि सर्वं च न भविष्यति ॥
तत्तत्स्मरणतां याति यद्यद्वस्त्वनुभूयते ।
स्वप्नानुभूतवत्सर्वं गतं न पुनरीक्ष्यते ॥

इहैव तिष्ठतस्तावद्गता नैके प्रियाप्रियाः ।
तन्निमित्तं तु यत्पापं तत्स्थितं घोरमग्रतः ॥
एवमागन्तुको ऽस्मीति मया न प्रत्यवेक्षितम् ।
मोहानुनयविद्वेषैः कृतं पापमनेकधा ॥
रात्रिंदिवमविश्राममायुषो वर्धते व्ययः ।
आयस्य चागमो नास्ति न मरिष्यामि किं न्वहम् ॥
इह शय्यागतेनापि बन्धुमध्ये ऽपि तिष्ठता ।
मयैवैकेन सोढव्या मर्मच्छेदादिवेदना ॥
यमदूतैर्गृहीतस्य कुतो बन्धुः कुतः सुहृत् ।
पुण्यमेकं तदा त्राणं मया तच्च न सेवितम् ॥
अनित्यजीवितासङ्गादिदं भयमजानता ।
प्रमत्तेन मया नाथा बहुदुःखमुपार्जितम् ॥
अङ्गच्छेदार्थमप्यद्य नीयमानो विशुष्यति ।
पिपासितो दीनदृष्टिरन्यदेवेक्षते जगत् ॥
किं पुनर्भैरवाकारैर्यमदूतैरधिष्ठितः ।
महात्रासज्वरग्रस्तः पुरीषोत्सर्गवेष्टितः ॥
कातरैर्दृष्टिपातैश्च त्राणान्वेषी चतुर्दिशम् ।
को मे महाभयादस्मात्साधुस्त्राणं भविष्यति ॥
त्राणशून्या दिशो दृष्ट्वा पुनः संमोहमागतः ।
तदाहं किं करिष्यामि तस्मिन्स्थाने महाभये ॥
अद्यैव शरणं यामि जगन्नाथान्महाबलान् ।
जगद्धितार्थमुद्युक्तान्सर्वत्रासहरां जिनान् ॥
तैश्चाप्यधिगतं धर्मं संसारभयनाशनम् ।
शरणं यामि भावेन बोधिसत्त्वगणं तथा ॥

---

1) The Dharmasaṃgraha, XIV.

2) Выписки взяты изъ Бодхичарјâватâра по нашей рукописи. Объ авторѣ и его сочиненіи см. Васильевъ, Буддизмъ. III, 165 и сл.

समन्तभद्रायात्मानं ददामि भयविह्वलः ।
पुनश्च मञ्जुघोषाय ददाम्यात्मानमात्मना ॥
तं चावलोकितं नाथं कृपाव्याकुलचारिणम् ।
विरौम्यार्तरवं भीतः स मां रक्षतु पापिनम् ॥
आर्यमाकाशगर्भं च क्षितिगर्भं च भावतः ।
सर्वान्महाकृपांश्चापि त्राणान्वेषी विरौम्यहम् ॥
यं दृष्ट्वैव च संत्रस्ताः पलायन्ते चतुर्दिशम् ।
यमदूतादयो दुष्टास्तं नमस्यामि वज्रिणम् ॥
अतीत्य युष्मद्वचनं सांप्रतं भयदर्शनात् ।
शरणं यामि वो भीतो भयं नाशयत द्रुतम् ॥
इत्वरव्याधिभीतो ऽपि वैद्यवाक्यं न लङ्घयेत् ।
किमु व्याधिशतैर्ग्रस्तश्चतुर्भिश्चतुरुत्तरैः ॥
एकेनापि यतः सर्वे जम्बुद्वीपगता नराः ।
नश्यन्ति येषां भैषज्यं सर्वदिक्षु न लभ्यते ॥
तत्र सर्वज्ञवैद्यस्य सर्वशल्यापहारिणः ।
वाक्यमुल्लङ्घयामीति धिग्मामत्यन्तमोहितम् ॥
तिष्ठाम्यतिप्रमत्तो ऽहं प्रपातेष्वितरेष्वपि ।
किमु योजनसाहस्रे प्रपाते दीर्घकालिके ॥
अद्यैव मरणं नैति न युक्ता मे सुखासिका ।
अवश्यमेति सा वेला न भविष्याम्यहं यदा ॥
अभयं केन मे दत्तं निःसरिष्यामि वा कथम् ।
अवश्यं न भविष्यामि कस्मान्मे सुस्थितं मनः ॥
पूर्वानुभूतनष्टेभ्यः किं मे सारमवस्थितम् ।
येषु मे ऽभिनिविष्टेन गुरूणां लङ्घितं वचः ॥
जीवलोकमिमं त्यक्त्वा बन्धून्परिचितांस्तथा ।
एकाकी क्वापि यास्यामि किं मे सर्वैः प्रियाप्रियैः ॥
इयमेव तु मे चिन्ता युक्ता रात्रिंदिवं सदा ।
अशुभान्नियतं दुःखं निःसरेयं ततः कथम् ॥
मया बालेन मूढेन यत्किंचित्पापमाचितम् ।
प्रकृत्या यच्च सावद्यं प्रज्ञप्त्यावद्यमेव च ॥
तत्सर्वं देशयाम्येष नाथानामग्रतः स्थितः ।
कृताञ्जलिर्दुःखभीतः प्रणिपत्य पुनः पुनः ॥
अत्ययमत्ययत्वेन प्रतिगृह्णन्तु नायकाः ।
अभद्रकमिदं नाथा न कर्तव्यं पुनर्मया ॥

बोधिचर्यावतारे पापदेशना नाम परिच्छेदो द्वितीयः ॥

अपायदुःखविश्रामं सर्वसत्त्वैः कृतं शुभम् ।
अनुमोदे प्रमोदेन सुखं तिष्ठन्तु दुःखिताः ॥
संसारदुःखनिर्मोक्षमनुमोदे शरीरिणाम् ।
बोधिसत्त्वत्वबुद्धत्वमनुमोदे च तायिनाम् ॥
चित्तोत्पादसमुद्रांश्च सर्वसत्त्वसुखावहान् ।
सर्वसत्त्वहिताधानाननुमोदे च शासिनाम् ॥

अनुमोदना ॥

सर्वासु दिक्षु संबुद्धान्प्रार्थयामि कृताञ्जलिः ।
धर्मप्रदीपं कुर्वन्तु मोहाद्दुःखप्रपातिनाम् ॥

अध्येषणा ॥

निर्वातुकामांश्च जिनां याचयामि कृताञ्जलिः ।
कल्पाननल्पांस्तिष्ठन्तु नाभूदन्धमिदं जगत् ॥

याचना ॥

एवं सर्वमिदं कृत्वा यन्मया साधितं शुभम् ।
तेन स्यां सर्वसत्त्वानां सर्वदुःखप्रशान्तिकृत् ॥
ग्लानानामस्मि भैषज्यं भवेयं वैद्य एव च ।
तदुपस्थायकश्चैव यावद्रोगापुनर्भवे ॥
क्षुत्पिपासाव्यथां हन्यामन्नपानप्रवर्षणैः ।
दुर्भिक्षान्तरकल्पेषु भवेयं पानभोजनम् ॥
दरिद्राणां च सत्त्वानां निधिः स्यामहमक्षयः ।
नानोपकरणाकारैरुपतिष्ठेयमग्रतः ॥

आत्मभावांस्तथा भोगान्सर्वत्र्यधगतं शुभम् ।
निरपेक्षस्त्यजाम्येष सर्वसत्त्वार्थसिद्धये ॥
सर्वत्यागश्च निर्वाणं निर्वाणार्थि च मे मनः ।
त्यक्तव्यं चेन्मया सर्वं वरं सत्त्वेषु दीयताम् ॥
यथा सुखी कृतश्चात्मा मयायं सर्वदेहिनाम् ।
घ्नन्तु निन्दन्तु वा नित्यमाकिरन्तु च पांशुभिः ॥
क्रीडन्तु मम कायेन हसन्तु विलसन्तु च ।
दत्तस्तेभ्यो मया कायश्चिन्तया किं ममानया ॥
कारयन्तु च कर्माणि यानि तेषां सुखावहम् ।
अनर्थः कस्यचिन्माभून्मामालम्ब्य कदाचन ॥
येषां क्रुद्धा प्रसन्ना वा मामालम्ब्य मतिर्भवेत् ।
स एव तेषां हेतुः स्यान्नित्यं सर्वार्थसिद्धये ॥
अभ्याख्यास्यन्ति मां ये च ये चान्ये ऽप्यपकारिणः ।
उत्प्रासकास्तथा ऽन्ये वा सर्वे स्युर्बोधिभागिनः ॥
अनाथानामहं नाथः सार्थवाहश्च यायिनाम् ।
पारेप्सूनां च नौभूतः सेतुः संक्रम एव च ॥
दीपार्थिनामहं दीपः शय्या शय्यार्थिनामहम् ।
दासार्थिनामहं दासो भवेयं सर्वदेहिनाम् ॥
चिन्तामणिर्भद्रघटः सिद्धविद्यामहोदधिः ।
भवेयं कल्पवृक्षश्च कामधेनुश्च देहिनाम् ॥
पृथिव्यादीनि भूतानि निःशेषाकाशवासिनाम् ।
सत्त्वानामप्रमेयानां यथा भोगान्यनेकधा ॥
एवमाकाशनिष्ठस्य सर्वधातोरनेकधा ।
भवेयमुपजीव्यो ऽहं यावत्सर्वे न निर्वृताः ॥
यथा गृहीतं सुगतैर्बोधिचित्तं पुरातनैः ।
ते बोधिसत्त्वशिक्षायामानुपूर्व्या यथा स्थिताः ॥
तद्वदुत्पादयाम्येष बोधिचित्तं जगद्धिते ।
तद्वदेव च ताः शिक्षाः शिक्षिष्यामि यथाक्रमम् ॥
एवं गृहीत्वा मतिमान्बोधिचित्तं प्रसादतः ।
पुनः पृष्ठस्य पुष्ट्यर्थं चित्तमेवं प्रहर्षयेत् ॥
अद्य मे सफलं जन्म सुलब्धो मानुषो भवः ।
अद्य बुद्धकुले जातो बुद्धपुत्त्रो ऽस्मि सांप्रतम् ॥
तथा ऽधुना मया कार्यं स्वकुलोचितकारिणा ।
निर्मलस्य कुलस्यास्य कलङ्को न भवेद्यथा ॥
अन्धः संकारकूटेभ्यो यथा रत्नमवाप्नुयात् ।
तथा कथंचिदप्येतद्बोधिचित्तं ममोदितम् ॥
जगन्मृत्युविनाशाय जातमेतद्रसायनम् ।
जगद्दारिद्र्यशमनं निधानमिदमक्षयम् ॥
जगद्व्याधिप्रशमनं भैषज्यमिदमुत्तमम् ।
भवाध्वभ्रमणश्रान्तजगद्विश्रामपादपः ॥
दुर्गत्युत्तरणसेतुः सामान्यः सर्वयायिनाम् ।
जगत्क्लेशोष्मशमन उदितश्चित्तचन्द्रमाः ॥
जगदज्ञानतिमिरप्रोत्सारणमहारविः ।
सद्धर्मक्षीरमथनान्नवनीतं समुत्थितम् ॥
सुखभोगबुभुक्षितस्य वा जनसार्थस्य भवाध्वचारिणः ।
सुखसत्त्रमिदं ह्युपस्थितं सकलाभ्यागतसत्त्वतर्पणम् ॥
जगदद्य निमन्त्रितं मया सुगतत्वेन सुखेन चान्तरा ।
पुरतः खलु सर्वतायिनामभिनन्दन्तु सुरासुरादयः ॥

बोधिचर्यावतारे बोधिचित्तपरिग्रहो नाम तृतीयः परिच्छेदः ॥

И. Минаевъ.